
Shri Shivashankara Stotram or Yamabhaya Nivarana Stotram

श्रीशिवशङ्करस्तोत्रम् अथवा यमभयनिवारणस्तोत्रम्

Document Information

Text title : shivashankarastotra

File name : shivashankarastotra.itx

Category : shiva, stotra

Location : doc_shiva

Transliterated by : Sunder Hattangadi

Proofread by : Sunder Hattangadi

Description-comments : Verses 1, 13-16 are considered shivachAmarastutiH

Latest update : December 31, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 28, 2021

sanskritdocuments.org

श्रीशिवशङ्करस्तोत्रम् अथवा यमभयनिवारणस्तोत्रम्



अतिभीषणकटुभाषणयमकिङ्किरपटवी
कृतताडनपरिपीडनमरणगमसमये ।
उभया सह मम येतसि यमशासन निवसन्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ १ ॥

असदिन्द्रियविषयोदयसुभसात्कृतसुकृतेः
परदूषणपरिमोक्षणकृतपातकविकृतेः ।
शमनाननभवकानननिरतेर्भव शरणं
शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ २ ॥

विषयाभिधब्दशायुधपिशितायितसुभतो
मकरायितमतिसन्ततिकृतसाहसविपदम् ।
परमालय परिपालय परितापितमनिशं
शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ ३ ॥

दयिता मम दुःखिता मम जननी मम जनको
मम कल्पितमतिसन्ततिमरुभूमिषु निरतम् ।
गिरिजासुभ जनितासुभ वसतिं कुरु सुभिनं
शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ ४ ॥

जनिनाशन मृतिमोचन शिवपूजननिरतेः
अभितो दृशमिदमीदृशमलभावल धति ला ।
गजकञ्चप जनित्रम विमलीकुरु सुमतिं
शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ ५ ॥

त्वयि तिष्ठति सकलस्थितिकरुणात्मनि दुदये
वसुमार्गण कृपणोक्षणा मनसा शिव विभुषम् ।
अकृताह्निकमसुपोषकभवतात् गिरिसुतया
शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ ६ ॥

पितराविति सुप्पदाविति शिश्रुना कृतलृट्यौ

शिवया सलु भयके लृटि जनिंतं तव सुकृतम् ।

ठति मे शिव लृट्यं भव भवतात्तव द्यया

शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ ७ ॥

शरणागतभरणाश्रित करुणामृतजवधे

शरणं तव यरणौ शिव मम संसृतिवसतेः ।

परिस्निभय जगदामयभिषजे नतिरावतात्

शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ ८ ॥

विविधाधिभिरतिभीतिरकृताधिकसुकृतं

शतकोटिषु नरकादिषु उतपातकविवशम् ।

मूढ मामव सुकृतीभव शिवया सलु कृपया

शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ ९ ॥

कलिनाशन गरलाशन कमलासनविनुत

कमलापतिनयनार्थितकरुणाकृतिचरण ।

करुणाकर मुनिसेवित भवसागरउरण

शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ १० ॥

विजितेन्द्रिय विबुधार्थित विमलाम्बुजचरण

भवनाशन भयनाशनभजिताङ्गितलृट्य ।

कृष्टिभूषण मुनिवेषण मदनान्तक शरणं

शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ ११ ॥

त्रिपुरान्तक त्रिदशेश्वर त्रिगुणात्मक शम्भो

वृषवाहन विषदूषण पतितोद्धर शरणम् ।

कनकासन कनकाम्बर कलिनाशन शरणं

शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ १२ ॥

॥ ठति श्रीशिवशङ्करस्तोत्रम् अथवा यमभयनिवारणस्तोत्रम् ॥

There are four more verses found in kShamApana stotram in
Shri Vatuk Puja Vidhi book of Paramananda Research Institute.
The verses are qualitatively similar and are added here for

completion.

अतिदुर्नय यदुवेन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते
पवि कर्कश कटु जल्पित भलगर्हण यलिते ।
शिवया सल ममयेतसि शशिशोभर निवसन्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ १३ ॥

भवभवञ्जन सुररञ्जन भलवञ्चन पुरलन्
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन् ।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयलन्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ १४ ॥


शकशासन कृतशासन यतुराश्रम विषये
कलि विग्रहभवदुर्गदरिपुदुर्बल समये ।
द्विज क्षत्रिय वनिताशिशुदर कम्पित वृद्धये
शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ १५ ॥

भव सम्भव विविधामय परिपीडित वपुषं
दयितात्मज ममताभर कलुषीकृत वृद्धयम् ।
कुरु मां निज यरणार्थन निरतं भव सततम्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर उर मे उर दुरितम् ॥ १६ ॥


The verses 1, 13-16 are termed as shivachAmarastutiH in some documents.

Some prints call this shivAShTakam as well.

Encoded and proofread by Sunder Hattangadi

——
Shri Shivashankara Stotram or Yamabhaya Nivarana Stotram

pdf was typeset on December 28, 2021

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

